मुक्तिबोध के काव्य में फेंटेसी

डॉ नीतू शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी

आईटी कॉलेज

लखनऊ

Created with Mi Notes

Scanned with CamScanner

मुक्तिबोध के काव्य में फेंटेसी

गजानन माधव मुक्तिबोध ने मानव जीवन के जटिल भावों की अभिव्यक्ति के लिए फैंटेसी का प्रयोग किया। मुक्तिबोध अपने परिवेश के जीवन से बहुत गहन भाव से जुड़े हुए थे । उनकी प्रगतिवादी दृष्टि परिवेश बोध सामाजिक चिंतन और अनुभव वैविध्य को और बल देती है । मुक्तिबोध की सबसे बड़ी शक्ति लोक परिवेश से गहरी संयुक्त तथा जन जीवन में विश्वास है।फैंटेसी शब्द यूनानी शब्द फेंटेसिया से बना है ,जिसका तात्पर्य है मनुष्य की वह क्षमता जो संभाव्य संसार की सर्जना करती है । मुक्तिबोध स्वयं फेंटेसी के संबंध में लिखते हैं कि फेंटेसी मन की निर्गुण वृतियों का अनुभव जीवन समस्याओं का इज्जत विश्वासों और इच्छित जीवन स्थितियों का प्रक्षेप है। मुक्तिबोध की ब्रह्मराक्षस" अंधेरे में और लकड़ी का रावण फेंटेसी पर कविताएं हैं फेंटेसी में भावात्मक उद्देश्य एवं दिशा होना जरूरी है फैंटेसी का कथा चरित्र कार्य सभी प्रतीकात्मक होते हैं मुक्तिबोध के कविता संग्रह है "चांद का मुंह टेढ़ा है" में संकलित "ब्रह्मराक्षस" और "अंधेरे में" दोनों कविताएं फेंटेसी परक हैं इसी कारण चर्चित हो रही है ब्रह्मराक्षस में मध्यवर्गीय चेतना को उजागर किया गया है स्वाधीनता आंदोलन के जो लक्ष्य निर्धारित किए गए उन लक्ष्यों से भटकाव इस मध्यम वर्ग की प्रवृत्ति के रूप में उभर कर कर आया व मध्यम वर्ग जुड़ा तो है निम्न वर्ग से परंतु उसकी आकांक्षाएं उच्च वर्गीय संसाधनों की ओर टिकी होती है और इसी उहापोह में पड़कर सर्वाधिक संख्या वर्ग के दायरे में सिमट गई है। एक तरफ से निम्न वर्गीय हितों के बारे में सोचता है तो दूसरी तरफ पूंजीवादी आकांक्षाओं को साधने की फिराक में लगा रहता है। यह कविता मध्यम वर्ग के इसी आत्म संघर्ष को उभारती है ब्रह्मराक्षस का आशय उस प्रेत से है जो प्रेतों में भी प्रेत हो ब्रह्मराक्षस का एक दूसरा तात्पर्य ब्रह्म प्रेत से लिया गया है वह ब्राह्मण जिस की असामयिक मृत्यु हो गई हो तथा जिसकी कोई इच्छा दबी रह गई हो ब्राह्मण का अर्थ यहां मध्यम वर्ग वर्ग बुद्धिजीवी वर्ग से है तथा "ब्रह्मराक्षस" से आशय इन बुद्धिजीवियों के लक्ष्यों के भटकाव को लेकर है।

Created with Mi Notes

Scanned with CamScanner

यह कविता मध्यम वर्ग के इसी आत्म संघर्ष को उभारती है ब्रह्मराक्षस का आशय उस प्रेत से है जो प्रेतों में थी प्रेत प्रेत हो ब्रह्मराक्षस का एक दूसरा तात्पर्य ब्रह्म प्रेत से लिया गया है यह ब्राह्मण जिस की की असामयिक मृत्यु हो गई हो तथा जिसकी कोई इच्छा दबी रह गई हो ब्राह्मण का अर्थ यहां मध्यम बुद्धिजीवी वर्ग से है तथा ब्रह्मराक्षस से आशय इन बुद्धिजीवियों के लक्ष्यों के भटकाव को लेकर है यह मध्यमवर्ग बुद्धिजीवी स्वाधीनता आंदोलन का अग्रदूत था। स्वाधीनता के लिए इसने जो भी लक्ष्य निर्धारित किए उन लक्ष्यों में असफलता ने ही इसे ब्रह्मराक्षस की शक्ल दे दी। समाजवादी वैचारिक ता को लेकर को लेकर यह वर्ग भटकता गया था इसकी निगाहें पूंजीवादी महत्वाकांक्षा की ओर संग गई दूसरी तरफ इसके अवचेतन मन में निम्न वर्ग के लिए सहानुभूति भी दबी दबी रह गई इस कविता का केंद्रीय भाव मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के इसी आत्म संघर्ष को उपस्थित करता संघर्ष को उपस्थित करता है यह एक कथानक कविता है जिसके दो खंड है पहले खंड में ब्रह्मराक्षस तथा उसके एकांत वाद और आत्म निष्ठ अहंकार वादी प्रलाप की चर्चा है यह लकड़ी की घनी अंधेरी छाया में उपभोग से प्राप्त दिखता है इसकी विडंबना यह है कि यह दुनिया के सभी दर्शन शास्त्र व विज्ञान का ज्ञाता है लेकिन अपने इस ज्ञान का प्रसार नहीं कर सकता अपने ज्ञानी होने का का इसे दंभ है इसे लगता है कि सूर्य ने इसे झुक कर सलाम किया चंद्रमा की चांदनी ने भी इसे ज्ञान गुरु माना जैसे पूरा आसमान ही इसकी गुरुता के इसकी गुरुता के आगे झुक गया मुक्तिबोध ज्ञानात्मक संवेदना तथा संवेदनात्मक ज्ञान की चर्चा करते हैं।

यह ब्रह्मराक्षस ज्ञानी है किंतु आत्म चेतस हैं। यह विश्व चेतन होने की कामना तो रखता है परंतु हो नहीं पाता अपनी संवेदना के प्रसार में असफल होकर आत्म संघर्ष करते-करते यह ब्रह्मराक्षस मर जाता है बावड़ी के जल में ताबड़तोड़ इसका स्नान कुछ और नहीं बल्कि पाप बोध से मुक्ति है ।

Created with Mi Notes

Scanned with CamScanner

कविता के दूसरे भाग में इस ब्रह्मराक्षस के अतीत की चर्चा है। यहां रचनाकार स्वयं कथावाचक के रूप में अवस्थित है । वह ब्रह्मराक्षस की मौत को जाया नहीं होने देना चाहता वह ब्रह्मराक्षस का सजल डर बनकर उसकी ज्ञानात्मक संवेदना को संवेदना गत प्रसार से जुड़ना चाहता है। यह कविता एक लंबी कविता है मुक्तिबोध ने स्वयं स्वीकार किया है कि मैं छोटी कविताओं को रखने में विश्वास नहीं करता क्योंकि छोटी कविताओं में भावों को यथार्थ पूर्ण ढंग से नहीं रखा जा सकता, इसीलिए एक दीर्घ कविता के कैनवास का चयन करता हूं । अवचेतन मन के अमूर्त भावों को सहज ढंग से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता इसी वजह से मुक्तिबोध ने ऐसी शैली तथा कथा वक्ता वक्ता कथा वक्ता वक्ता का प्रयोग किया छोटी बड़ी इच्छाओं और अंतर गुहा में दबी भावनाओं को पकड़ने के लिए रचनाकार ने जटिल बिंबो तथा प्रतीकों का सहारा लिया। इस कविता का स्थापत्य ऊपरी तौर पर अनपढ़ प्रतीत होता है परंतु विषय वस्तु को लेकर कुछ ऐसी सीमाएं रही है जिसकी वजह से इस प्रकार के शिल्प का चयन करना पड़ता है । छायावादोत्तर रचनाओं में आगे वा मुक्तिबोध की रचनाओं को विशेष वरीयता दी गई । मुक्तिबोध की कविता हद में बुद्धिजीवियों का ही विरोध नहीं करती बल्कि अपने आदर्शों से भटके प्रगतिवादीयों की छद्म चेतना का भी विरोध करती है उन्होंने लिखा "बौद्धिक वर्ग है रे क्रीत दास"

संदर्भ सूची

१.सर्वेश्वर मुक्तिबोध और अज्ञेय:डॉ कृपा शंकर पांडे

२.चांद का मुँह टेढ़ा है:डॉ कृष्ण देव वर्मा

Created with Mi Notes

Scanned with CamScanner